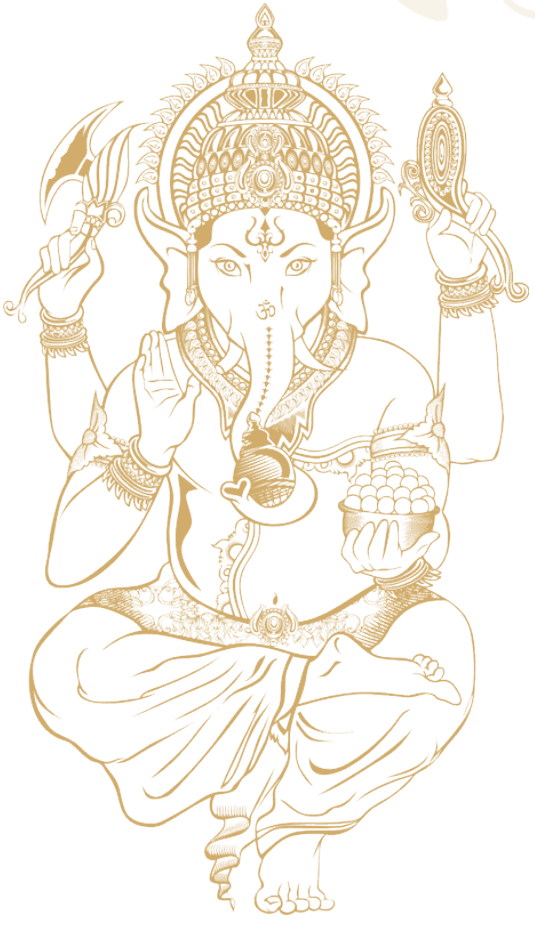

Karan sharma

Jyoti Sharma

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121111801

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121111801 Date: 30/01/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
12/04/1989	जन्म तिथि	14/11/1990
बुधवार	दिन	बुधवार
घंटे 10:30:00	जन्म समय	14:30:00 घंटे
घटी 10:55:31	जन्म समय(घटी)	18:52:10 घटी
India	देश	India
Firozpur	स्थान	Sultanpur Lodhi
30:55:00 उत्तर	अक्षांश	31:15:00 उत्तर
74:38:00 पूर्व	रेखांश	75:20:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:31:28	स्थानिक संस्कार	-00:28:40 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:07:47	सूर्योदय	06:54:55
18:57:20	सूर्यास्त	17:31:04
23:42:33	चित्रपक्षीय अयनांश	23:43:59

मिथुन	लग्न	कुम्भ
बुध	लग्न लग्नाधिपति	शनि
मिथुन	राशि	कन्या
बुध	राशि-स्वामी	बुध
आर्द्रा	नक्षत्र	चित्रा
राहु	नक्षत्र स्वामी	मंगल
4	चरण	1
अतिगण्ड	योग	प्रीति
वणिज	करण	गर
छ-छत्रपति	जन्म नामाक्षर	पे-पैनी
मेष	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृश्चिक
शूद्र	वर्ण	वैश्य
मानव	वश्य	मानव
श्वान	योनि	व्याघ्र
मनुष्य	गण	राक्षस
आद्य	नाड़ी	मध्य
सिंह	वर्ग	मूषक

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
राहु 0वर्ष 7मा 9दि		10:53:08	मिथु	लग्न	कुंभ	26:44:17	मंगल 6वर्ष 3मा 0दि	
बुध		28:33:38	मीन	सूर्य	तुला	27:59:40	गुरु	
20/11/2024		19:32:57	मिथु	चंद्र	कन्या	24:45:33	14/02/2015	
20/11/2041		25:48:24	वृष	मंगलव	वृष	16:31:53	14/02/2031	
बुध	19/04/2027	06:55:42	मेष	बुध	वृश्चि	11:21:28	गुरु	03/04/2017
केतु	15/04/2028	11:54:20	वृष	गुरु	कर्क	19:27:22	शनि	15/10/2019
शुक्र	14/02/2031	00:25:04	मेष	शुक्र	वृश्चि	01:11:37	बुध	20/01/2022
सूर्य	21/12/2031	20:07:25	धनु	शनि	धनु	27:07:39	केतु	27/12/2022
चन्द्र	22/05/2033	09:59:30	कुंभ व	राहु व	मक	07:10:03	शुक्र	27/08/2025
मंगल	19/05/2034	09:59:30	सिंह व	केतु व	कर्क	07:10:03	सूर्य	15/06/2026
राहु	05/12/2036	11:37:17	धनु व	हर्ष	धनु	13:21:38	चन्द्र	15/10/2027
गुरु	13/03/2039	18:40:28	धनु	नेप	धनु	18:46:45	मंगल	20/09/2028
शनि	20/11/2041	20:41:32	तुला व	प्लूटो	तुला	24:08:07	राहु	14/02/2031

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:42:33 चित्रपक्षीय अयनांश 23:43:59

लग्न-चलित

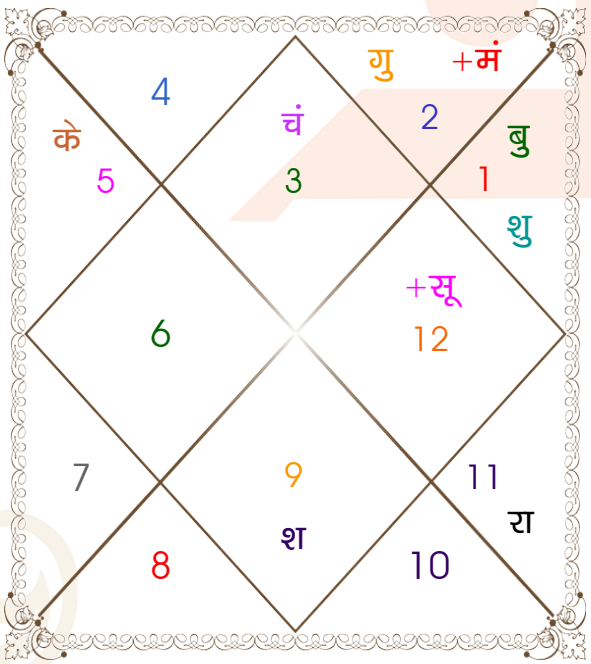

लग्न-चलित

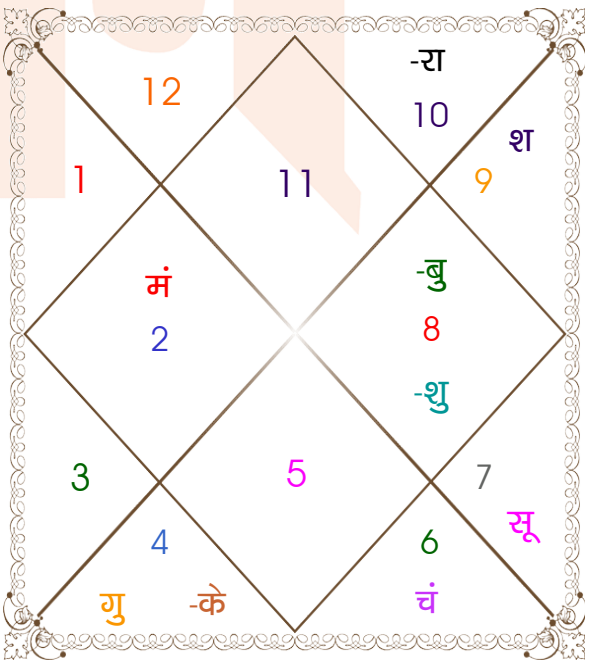

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	वैश्य	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	--	भाग्य
योनि	श्वान	व्याघ्र	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	बुध	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	मिथुन	कन्या	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	26.00		

कुल : **26 / 36**

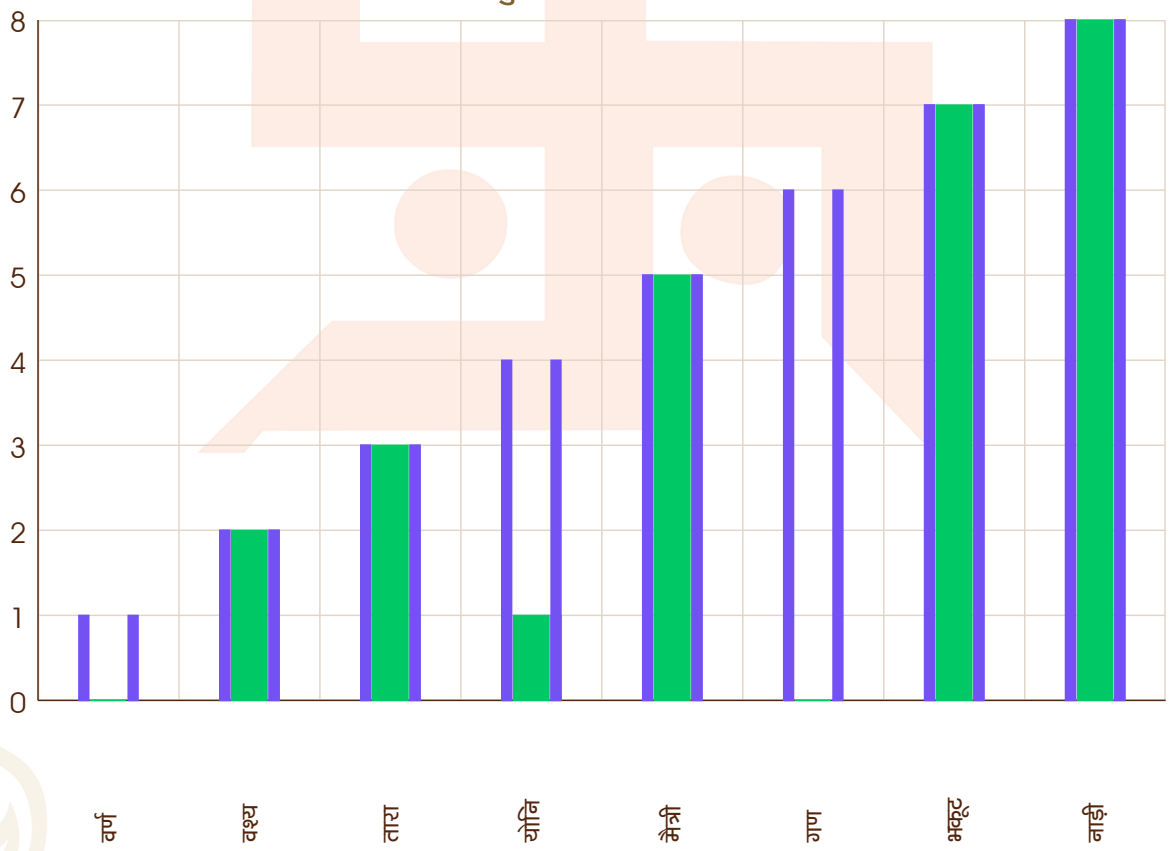

अष्टकूट मिलान

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

झंतंद ेीतउं का वर्ग सिंह है तथा श्रलवजपेीतउं का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार झंतंद ेीतउं और श्रलवजपेीतउं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

झंतंद ेीतउं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल झंतंद ेीतउं कि कुण्डली में द्वादश भाव में वृष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु झंतंद ेीतउं कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

श्रलवजपेीतउं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु श्रलवजपेीतउं कि कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि श्रलवजपौंतउं कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

इंतंद ौंतउं तथा श्रलवजपौंतउं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

ज्ञंतंद ेींतउं का वर्ण शूद्र है तथा श्रलवजप ैींतउं का वर्ण वैश्य है। क्योंकि श्रलवजप ैींतउं का वर्ण ज्ञंतंद ेींतउं के वर्ण से ऊँचा है जिसके कारण यह अच्छा मिलान नहीं है। श्रलवजप ैींतउं अति स्वार्थी तथा धन-लोलुप होगी। वह हमेशा दूसरों की कीमत पर सिर्फ अपने स्वार्थ की पूर्ति करती रहेगी। यह श्रलवजप ैींतउं अपने पति, बच्चों तथा परिवार के लोगों की न तो चिन्ता करेगी और न ही देखभाल। लड़ाई-झगड़ा करके यह हमेशा घर के लोगों का जीना दूभर कर सकती है।

वश्य

ज्ञंतंद ेींतउं का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं श्रलवजप ैींतउं का वश्य भी द्विपद अर्थात मनुष्य है अर्थात दोनों का वश्य समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान होगा। ज्ञंतंद ेींतउं एवं श्रलवजप ैींतउं दोनों के स्वभाव, गुण, व्यवहार पसंद/नापसंद तथा बुद्धि एवं ज्ञान एक समान होंगे। यह मिलान अति अनुकूल है तथा दोनों एक-दूजे के लिए ही बने हैं। दोनों के बीच प्रेम, सद्भावना एवं आपसी समझ एवं सामंजस्य की भावना बनी रहेगी। दोनों एक-दूसरे का सम्मान करेंगे तथा मिलजुलकर पारिवारिक दायित्वों का बोझ एक-दूसरे की सहायता एवं सहयोग करके साथ उठाते रहेंगे।

तारा

ज्ञंतंद ेींतउं की तारा सम्पत तथा श्रलवजप ैींतउं की तारा अतिमित्र है। अतः तारा मिलान अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इस मिलान के कारण उत्तम स्वास्थ्य, धन एवं समृद्धि का बनी रहेगी। इस विवाह से ज्ञंतंद ेींतउं एवं श्रलवजप ैींतउं दोनों के सौभाग्य के द्वार खुल जायेंगे। श्रलवजप ैींतउं एक अच्छे साथी की भूमिका अदा करने वाली होगी तथा अपने पति की हर प्रकार से समय समय पर मदद करती रहेगी। घर में प्रेम, शांति एवं सौहार्द का माहौल बना रहेगा। इनकी संतान भी काफी अच्छी होंगी तथा जीवन में सफलता प्राप्त करती रहेंगी।

योनि

ज्ञंतंद ेींतउं की योनि श्वान है तथा श्रलवजप ैींतउं की योनि व्याघ्र है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग-अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय

अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना का अभाव ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में झंतंद ौतउं एवं श्रलवजपौतउं दोनों के राशि स्वामी समान हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि झंतंद ौतउं एवं श्रलवजपौतउं दोनों के राशि स्वामी एक ही होने के कारण कुंडली मिलान में इसे अति उत्तम माना जाता है तथा पूरे 5 अंक प्रदान किए जाते हैं। जिसके कारण दोनों में असीम प्रेम बना रहेगा तथा साथ ही दोनों जीवन के हर क्षेत्र में एक-दूसरे का सहयोग करते रहेंगे। इनका प्रयास रहेगा कि वे स्वयं को आदर्श दम्पत्ति साबित कर सकें। इनके बच्चे योग्य, आज्ञाकारी, सफल एवं यशस्वी होंगे।

गण

झंतंद ौतउं का गण मनुष्य तथा श्रलवजपौतउं का गण राक्षस है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। अतः श्रलवजपौतउं का निर्दयी, निष्ठुर एवं कड़ा स्वभाव रहेगा जिसके कारण झंतंद ौतउं एवं उसके परिवार के सदस्यों का जीवन कष्टपूर्ण हो सकता है। साथ ही पति-पत्नी के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा बना रह सकता है। जिसके कारण तलाक एवं मुकदमे की संभावना भी बन सकती है।

भकूट

झंतंद ौतउं से श्रलवजपौतउं की राशि चतुर्थ भाव में स्थित है तथा श्रलवजपौतउं से झंतंद ौतउं की राशि दशम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण झंतंद ौतउं परिश्रमी एवं अपने व्यवसाय में काफी अच्छे होंगे। अपने व्यवसाय में लगन, निष्ठा एवं मेहनत के कारण उन्हें सभी से प्रशंसा प्राप्त होती रहेगी। दूसरी ओर श्रलवजप ौतउं घरेलू होंगी। अपने आतिथ्य भाव एवं सब का ध्यान रखने तथा बड़ों को सम्मान देने की प्रवृत्ति कारण परिवार के सदस्यों की आंखों का तारा होंगी। पति-पत्नी के बीच असीम प्रेम, सहयोग एवं सामंजस्य बना रहेगा।

नाड़ी

झंतंद ौतउं की नाड़ी आद्य है तथा श्रलवजपौतउं की नाड़ी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। आद्य एवं मध्य नाड़ी का मिलान अति उत्तम माना जाता है क्योंकि इसमें जीवन के तीन आवश्यक घटकों में से दो वात एवं पित्त का समन्वय है। जीवन के अस्तित्व के

लिए वात एवं पित्त का समन्वय आवश्यक है। जिसके कारण आपकी संतान काफी बुद्धिमान, स्वस्थ, मानसिक रूप से दृढ़ एवं सौभाग्यशाली होंगी। जो भौतिकवादी विश्व में सुविधा संपन्न जीवन जीने के लिए आवश्यक है।

मेलापक फलित

स्वभाव

झंतंद ेींतउं की जन्म राशि वायुतत्व युक्त मिथुन राशि है तथा श्रलवजपैींतउं की जन्म राशि पृथ्वी तत्व युक्त कन्या राशि है। यद्यपि वायु एवं पृथ्वी तत्व में परस्पर विषमता रहती है परन्तु श्रलवजपैींतउं और झंतंद ेींतउं आपसी सामंजस्य एवं बुद्धिमता से अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाने में समर्थ रहेंगे। सामान्यतया यह मिलान उत्तम रहेगा।

झंतंद ेींतउं और श्रलवजपैींतउं की जन्म राशियों का स्वामी बुध है अतः उत्तम दाम्पत्य सुख के लिए यह स्थिति शुभ मानी जाती है। इसके प्रभाव से झंतंद ेींतउं और श्रलवजपैींतउं में शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर अधिकांश समानताएं रहेंगी जिससे परस्पर प्रेम सहानुभूति एवं सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही एक दूसरे के दोषों की उपेक्षा करके वे गुणों से प्रभावित रहेंगे तथा आनंद पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे। वे खान पान में या अन्यत्र भी एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे जिससे परस्पर संबधों में मधुरता रहेगी।

झंतंद ेींतउं और श्रलवजपैींतउं की राशियां परस्पर चतुर्थ एवं दशम भाव में पड़ती है। यह शुभ भकूट होता है। इसके प्रभाव से झंतंद ेींतउं और श्रलवजपैींतउं के मध्य पूर्ण आवेग से प्रेम एवं स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए वे सर्वदा तत्पर रहेंगे। उनमें एक दूसरे के प्रति सम्मान एवं समर्पण की भावना भी विद्यमान रहेगी जिससे आपस में झंतंद ेींतउं और श्रलवजपैींतउं गर्व की अनुभूति करेंगे।

झंतंद ेींतउं और श्रलवजपैींतउं दोनों का वश्य मानव है। अतः दोनों की अभिरूचियों में पूर्ण समानता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी आवश्यकता बराबर रहेगी। साथ ही दाम्पत्य सुख में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे जिससे झंतंद ेींतउं और श्रलवजपैींतउं का दाम्पत्य जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

झंतंद ेींतउं का वर्ण शूद्र है। अतः किसी भी प्रकार के कार्य को गम्भीरता तथा ईमानदारी से करने में तत्पर रहेंगे। श्रलवजपैींतउं का वर्ण वैश्य होने से धनार्जन के प्रति उनकी रुचि रहेगी तथा व्यापारिक बुद्धि से कार्यो को सम्पन्न करेंगी। इस प्रकार झंतंद ेींतउं और श्रलवजपैींतउं की कार्य क्षमता में अल्प अंतर होते हुए भी इसमें सुदृढ़ता बनी रहेगी।

धन

झंतंद ेींतउं सम्पत तथा श्रलवजपैींतउं अतिमित्र तारा में उत्पन्न हुए है। अतः इसके शुभ प्रभाव से इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। इनका भकूट सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा सामान्य रूप से इनकी स्थिति रहेगी लेकिन मंगल का झंतंद ेींतउं की आर्थिक स्थिति पर दुष्प्रभाव होगा जिससे यदा कदा वे आर्थिक विषमता का

सामना कर सकते हैं।

झंतंद ैतउं भाग्यवान तथा धनाढ्य व्यक्ति होंगे तथा श्रलवजपैतउं के शुभ प्रभाव से धनऐश्वर्य की अभिवृद्धि करने में सफल होंगे। साथ ही अनायास धन प्राप्ति के भी योग बनेंगे। लेकिन झंतंद ैतउं को अपनी व्ययशील प्रवृति पर नियंत्रण रखने की कोशिश करनी चाहिए।

स्वास्थ्य

झंतंद ैतउं की नाड़ी आद्य तथा श्रलवजपैतउं की नाड़ी मध्य है। अतः इन पर नाड़ी दोष का कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से इनका स्वास्थ्य अच्छा ही रहेगा परन्तु मंगल का दोनों के ऊपर दुष्प्रभाव होगा जिससे दोनों धातु या गुप्त रोग संबंधी कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही झंतंद ैतउं हृदय रोग संबधी परेशनियों से युक्त रहेंगे जिससे शारीरिक क्षीणता रहेगी तथा श्रलवजपैतउं को गर्भपात की संभावना होगी। मंगल के प्रभाव से झंतंद ैतउं के पुरूषत्व में न्यूनता आएगी तथा श्रलवजपैतउं भी उदासीनता का भाव प्रदर्शित करेंगी फलतः उनके दाम्पत्य सुख में भी न्यूनता का आभास होगा। अतः उपरोक्त दुष्प्रभावों में कमी करने के लिए झंतंद ैतउं और श्रलवजपैतउं को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही मूंगा धारण करना दोनों के लिए श्रेयष्कर रहेगा।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से झंतंद ैतउं और श्रलवजपैतउं का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त झंतंद ैतउं और श्रलवजपैतउं के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में श्रलवजपैतउं के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन श्रलवजपैतउं को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में श्रलवजपैतउं को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से झंतंद ैतउं और श्रलवजपैतउं सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार झंतंद ैतउं और श्रलवजपैतउं का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

श्रलवजपौंतउं के सास से संबधों में मधुरता के भाव की सामान्यतया न्यूनता ही रहेगी तथा अपनी सास के साथ सामंजस्य स्थापित करने में उनको काफी कठिनाई तथा असुविधा का सामना करना पड़ेगा। अतः उनसे संबधों में मधुरता लाने के लिए श्रलवजपौंतउं को धैर्य तथा बुद्धिमता का परिचय देना चाहिए तथा अपने समस्त कार्य कलापों को सक्रियता से सम्पन्न करना चाहिए।

साथ ही ससुर से भी श्रलवजपौंतउं को समय समय पर समस्याएं उत्पन्न होगी तथा उन्हें प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में उन्हें कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। ननद एवं देवरों से भी श्रलवजपौंतउं के संबधों में तनाव का भाव रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति स्नेह तथा सहानुभूति के भाव में न्यूनता रहेगी फलतः परस्पर प्रतिद्वन्दिता एवं आलोचना का भाव रहेगा।

इस प्रकार श्रलवजपौंतउं का ससुराल के लोगों से अच्छे संबध नहीं रहेंगे जिससे यदा कदा वे असुविधा की अनुभूति कर सकती हैं।

ससुराल-श्री

झंतंद ौंतउं के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को झंतंद ौंतउं अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी झंतंद ौंतउं के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण झंतंद ौंतउं के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।